ISSN 2231-5187

साखी 35

प्रेमचन्द साहित्य संस्थान का त्रैमासिक

Post Off. Regd. No-G-2/VSI (E)-015/2021-22

सम्पादक: सदानन्द शाही

अंक : 35
मास : अक्टूबर 2021

ISSN : 2231-5187

साखी

प्रेमचन्द साहित्य संस्थान का त्रैमासिक

संस्थापक : केदारनाथ सिंह

सम्पादक : सदानन्द शाही

www.premchandsahityasansthan.com

संस्थापक : केदारनाथ सिंह

सम्पादक मण्डल : पी. एन. सिंह/अवधेश प्रधान/रघुवंश मणि/सन्ध्या सिंह
सम्पादक : सदानन्द शाही
सहायक सम्पादक : डॉली मेघनानी

प्रतिनिधि : भानुप्रताप सिंह, मो. 8299206277 **(गोरखपुर)**
बृजराज कुमार सिंह, मो. 9838709090 **(आगरा)**
कमल कुमार, मो. 7003022681 **(कोलकाता)**
सुजीत कुमार सिंह, मो. 9454351608 **(इलाहाबाद)**
निरंजन कुमार यादव, मो. 8726374017 **(गाजीपुर)**
अमित कुमार सिंह, मो. 9407655400 **(बिलासपुर)**
विशाल विक्रम सिंह, मो. 9461672755 **(जयपुर)**
राकेश कुमार रंजन, मो. 9450938895 **(गया)**

आवरण चित्र : सुरेश के. नायर

सज्जा : राहुल कुमार शॉ

प्रसार : विश्वमौलि, मो. 9450209580
इन्दुशेखर त्रिपाठी, मो. 7376831000

अक्षर संयोजन : श्री काशी विश्वनाथ कम्प्यूटर, वाराणसी
मुद्रक : मित्तल आफसेट, वाराणसी

साखी को भुगतान करने के लिए किसी भी यूपीआई एप से इस क्यूआर कोड को स्कैन करें।

BHIM UPI

PAY WITH ANY APP

UPI ID :
BHARATPE.0103070150@indus

सहयोग राशि

यह अंक	:	**अस्सी रुपये मात्र**
सदस्यता	:	**तीन सौ रुपये मात्र (चार अंकों के लिए) आजीवन (दस वर्ष के लिए) तीन हजार रुपये मात्र**
संस्थाओं के लिए	:	**पाँच सौ रुपये मात्र (चार अंकों के लिए) आजीवन (दस वर्ष के लिए) पाँच हजार रुपये मात्र**
विदेश के लिए	:	**चालीस डॉलर मात्र (चार अंकों के लिए) आजीवन (दस अंकों के लिए) पाँच सौ डालर मात्र**

कृपया भुगतान 'साखी' के नाम डिमांड ड्राफ्ट /चेक/धनादेश से सम्पादकीय पते पर भेजें। बाहर के चेक में 15 रुपये अतिरिक्त जोड़ें अथवा साखी के खाता संख्या-**19270100012904** RTGS/NEFT IFSC Code **BARB0LANKAX (0 as Zero)** बैंक ऑफ बड़ौदा, लंका-वाराणसी में जमा करें।

सम्पादकीय सम्पर्क
क
बी-2, सत्येन्द्र गुप्त नगर, लंका
वाराणसी-221005, उ.प्र.
दूरभाष/फैक्स : 0542-2366771
मोबाइल : 09450091420, 9616393771

ईमेल
saakhee2000@gmail.com
वेवसाइट
www.premchandsahityasansthan.com

(वाद क्षेत्र : वाराणसी न्यायालय)

(राजेश कुमार मल्ल, सचिव-प्रेमचन्द साहित्य संस्थान, प्रेमचन्द पार्क, बेतियाहाता, गोरखपुर, उ.प्र. द्वारा प्रकाशित)

www.notnul.com पर सभी अंक उपलब्ध

इस अंक में

पूर्व सम्पादकीय

भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है	भारतेन्दु हरिश्चन्द	5
भारतेन्दु और भारत की उन्नति	नामवर सिंह	11
भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है : भारतेन्दु का नज़रिया	वसुधा डालमिया	19

सम्पादकीय

भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है : पुनश्च	सदानन्द शाही	25

व्याख्यान

आलोचना की जरूरत	अरुण कमल	29

भारतीय कविता से साक्षात्कार

गुजराती कवि सितांशु यशश्चंद्र से रंजना अरगड़े की बातचीत		38
सितांशु यशश्चंद्र की कविताएँ	अनु. रंजना अरगड़े	48

भक्ति-कविता

अक्क महादेवी के वचन	गगन गिल	57
तेजस्विनी (अक्क महादेवी की कविताएँ)	गगन गिल	63
सभी खेतों में एक जैसी फसलें नहीं होतीं (मीरा की कविता के उपलब्ध पाठ और उनकी प्रामाणिकता का सवाल)	माधव हाड़ा	69

कहानी

अच्छा चलो, यूँ ही सही	नवनीत मिश्र	81

कविता

विमल कुमार की छह कविताएँ 91
मीना सिंह की दो कविताएँ 101
वंदना शाही की पाँच कविताएँ 104

देशान्तर

ब्राजील की लघु कथाएँ प्रस्तुति : गरिमा श्रीवास्तव 108

संस्मरण/यात्रा-संस्मरण

बिस्तर पर पड़े अपने 'किंगलियर' को देखना दुर्गा प्रसाद गुप्त 120
सार्त्र की कब्र पर 'बोसा' राजीव सिंह 135

परिसर से

अंकिता शाम्भवी की कविताएँ 141

समीक्षा

सीता की विभिन्न भावमूर्तियों का अप्रतिम कोलाज : 'सीता की खोज' भारती गोरे 153
(सीता की खोज—अवधेश प्रधान)
पूर्वी जर्मनी की आजादी और त्रासदी का आख्यान अवधेश प्रधान 167
(थोड़ा सा खुला आसमान—रामकठिन सिंह)
पृथ्वी की पीड़ा, प्रकृति की वेदना, जंगल के जख्म की अभिव्यक्ति अरुण होता 175
(अस्थिफूल—अल्पना मिश्र)
सृष्टि को सिरजने का साहसिक संकल्प प्रभाकर सिंह 183
(ईश्वर नहीं नींद चाहिए—अनुराधा सिंह)
रोशनियों के नये घेरे की तलाश में (बिसात पर जुगनू—वन्दना राग) शीतल 188
सरहदों की गुमनाम दास्तान कृति कुमारी 192
(कुलभूषण का नाम दर्ज कीजिए—अलका सरावगी)
व्यष्टि से समष्टि तक की यात्रा (अंतर्गाथा—मंजीत चतुर्वेदी) स्वाती सिंह 197
काशी की सांस्कृतिक पतनशीलता पर एक बेपरवाह टिप्पणी रुद्र प्रताप सिंह 203
(ढकोसला और तर्पणनाम—अजय मिश्र)

इस अंक के सहयोगी 208

●

भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है?

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

आज बड़े ही आनंद का दिन है कि इस छोटे से नगर बलिया में हम इतने मनुष्यों को बड़े उत्साह से एक स्थान पर देखते हैं। इस अभागे आलसी देश में जो कुछ हो जाय वही बहुत कुछ है। बनारस ऐसे-ऐसे बड़े नगरों में जब कुछ नहीं होता तो यह हम क्यों न कहेंगे कि, बलिया में जो कुछ हमने देखा वह बहुत ही प्रशंसा के योग्य है। इस उत्साह का मूल कारण जो हमने खोजा तो प्रगट हो गया कि इस देश के भाग्य से आजकल यहाँ सारा समाज ही ऐसा एकत्र है। जहाँ राबर्ट्स साहब बहादुर ऐसे कलेक्टर हों वहाँ क्यों न ऐसा समाज हो। जिस देश और काल में ईश्वर ने अकबर को उत्पन्न किया था उसी में अबुलफज़ल, बीरबल, टोडरमल को भी उत्पन्न किया। यहाँ राबर्ट्स साहब अकबर हैं तो मुंशी चतुर्भुज सहाय, मुंशी बिहारीलाल साहब आदि अबुलफ़जल और टोडरमल हैं। हमारे हिंदुस्तानी लोग भी तो रेल की गाड़ी हैं। यद्यपि फस्ट क्लास, सेकंड क्लास आदि गाड़ी बहुत अच्छी-अच्छी और बड़े-बड़े महसूल की इस ट्रेन में लगी हैं पर बिना इंजिन के नहीं चल सकतीं, वैसे ही हिन्दुस्तानी लोगों को कोई चलानेवाला हो तो वे क्या नहीं कर सकते। इनसे इतना कह दीजिए ''का चुप साधि रहा बलवाना'', फिर देखिए हनुमानजी को अपना बल कैसे याद आ जाता है। सो बल कौन याद दिलावै या हिंदुस्तानी राजे-महाराजे या नवाब रईस या हाकिम। राजे-महाराजों को अपनी पूजा, भोजन, झूठी गप से छुट्टी नहीं। हाकिमों को कुछ तो सरकारी काम घेरे रहता है, कुछ बॉल, घुड़दौड़, थिएटर, अखबार में समय गया। कुछ समय बचा भी तो उनको क्या गरज है कि हम गरीब गंदे काले आदमियों से मिलकर अपना अनमोल समय खोवें। बस वही मसल हुई—'तुम्हें गैरों से कब फुरसत हम अपने गम से कब खाली। चलो, बस हो चुका मिलना न हम खाली न तुम खाली।' तीन मेंढक एक के ऊपर एक बैठे थे। ऊपरवाले ने कहा 'ज़ौक शौक', बीचवाला बोला 'गुम सुम', सब के नीचे वाला पुकारा 'गए हम'। सो हिन्दुस्तान की साधारण प्रजा की